Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March-23

(CCCXCVIIII) 399 (B)

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. Shaikh Md. Babar
Principal
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

Editor
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Impact Factor – (SJIF) –8.632 **ISSN – 2278-9308**

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2023

ISSUE No- (CCCXCVIIII) 399-B

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

Chief Editor
Prof. Virag.S.Gawande
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Executive-Editor
Dr. Shaikh Md. Babar
Principal,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science Parbhani, Dist.- Parbhani,

Editor
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science Parbhani, Dist.- Parbhani,

Aadhar International Publication
For Details Visit To : www.aadharsocial.com
© All rights reserved with the authors & publisher

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal

Impact Factor -(SJIF) -8.632, , Issue NO, (CCCXCVIII) 399-B

ISSN : 2278-9308 March , 2023

INDEX-B

No	Title of the Paper / Authors Name	Page No
1	राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रीय चेतना का चिठ्ठा: स्वाधीनता आंदोलन की हिंदी कविताएं **प्रो.महेबूब मंगरूले**	1
2	हिन्दी कविता में स्वाधीनता आन्दोलन का चित्रण **प्रा. संजू मधुकरराव सूर्यवंशी देशमुख**	6
3	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य **प्रा.श्रीकांत विलासगिर गोस्वामी**	9
4	स्वा धीनता-आंदोलन और आदिवासी सेनानी: बिरसा मुंडा **प्रो.डॉ.प्रतिभा जी.येरेकार**	11
5	माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीयता' **प्राचार्य डॉ.शेखर पांडूरंग घुंगरवार**	14
6	रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में राष्ट्रभक्ती **प्रा. डॉ. बालाजी विलासराव महाळंकर**	17
7	स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी कविता **डॉ. अश्विनीकुमार नामदेवराव चिंचोलीकर**	21
8	स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी का योगदान **डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे**	23
9	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कवियों की राष्ट्रीय चेतना **प्रो.डॉ.वंदन जाधव**	26
10	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य **डॉ.निवृत्ती मेंडेकर**	30
11	भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य का अनुशीलन **प्रो. डॉ.बबन रंगाजीराव बोडके**	33
12	स्वाधीनता संग्राम में क्रांतिकारी आंदोलन का योगदान **प्रा. डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी**	36
13	स्वाधीनता संघर्ष में हिंदी सिनेमा का योगदान **डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ**	39
14	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी साहित्य **डॉ. वसंत पुंजाजी गाडे**	43
15	राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी का परिचयात्म अध्ययन **प्रा.संतोष शिवराज पवार**	47
16	जंगल जंगल जलियांवाला' अंग्रेजी और देसी सत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध **डॉ. रमेश संभाजी कुरे**	51
17	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य **प्रो. डॉ. अरुणा राजेंद्र शुक्ल**	55
18	जीवनी विधा में व्यक्त स्वाधीनता आंदोलन (विशेष संदर्भ : वीरांगना कनकलता बरूआ-निशा नंदिनी) **डॉ. अशोक तुकाराम जाधव**	58
19	हैदराबाद स्वाधीनता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता का योगदान **डॉ. अनिता कृष्णा भंडारे**	61
20	आधुनिक हिंदी काव्य में 'राष्ट्रीय चेतना' **प्रा.डॉ. साळुंके शिवहार भुजंगराव**	63
21	स्वाधीनता अंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता का योगदान **डॉ.भिमराव मानकरे**	67
22	स्वाधीनता आन्दोलन में हिंदी फिल्मों की मनोवैज्ञानिक उपादेयता **डॉ. राजेश**	71

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, , Issue NO, (CCCXCVIIII) 399-B
ISSN : 2278-9308
March , 2023

स्वाधीनता संघर्ष में हिंदी सिनेमा का योगदान

डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
संशोधक मार्गदर्शक एवं आचार्य हिन्दी विभागाध्यक्ष शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली
ई-मेल wagh.sudhir001@gmail.com

मुख्य शब्द- जन-आंदोलन, चलचित्र, नैतिकतावादी दृष्टिकोण, सुधारवादी आंदोलन, स्वाधीनता संघर्ष।

कला प्रकृति का प्रतिबिम्ब है। अनादि काल से यह मानव प्रकृति के रम्य और विभिन्न रूपों को जीवन के विशाल कैनवास पर उतारती चली आ रही हैं चित्र कला, संगीत कला, साहित्य, शिल्प और नाट्य कला की भांति 'चित्रपट' उनमें एक नवीन रूपभिव्यक्ति है। यह राष्ट्रीय एकता और विश्व बन्धुत्व की भावना का पोषण करता है । चलचित्र, कला और देश दोनों की सेवा करता है तथा जनता तक पहुंचने वाला सबसे अच्छा माध्यम है। स्वतंत्रता प्राप्ति वह संधि रेखा कही जा सकती है जहां भारतीय सिनेमा पचास वर्ष का सफर तय करके आया था । मूलतः आजादी के तीस वर्ष पहले से सही अर्थों में भारतीय सिनेमा की शुरुआत कही जा सकती है। सन् 1931 में प्रथम सवाक सिनेमा आलम आरा को दर्शकों ने पहली बार बड़े पर्दे पर बोलती हुई फिल्म के रूप में सुना और देखा था। इसके बाद से स्वतंत्रता तक के सिनेमा का इतिहास मुख्यतः राष्ट्रीय विचारों और नैतिकतावादी दृष्टिकोण से प्रेरित था। स्वतंत्रता आंदोलन, गांधीवादी विचार धारा तथा समाज में चल रहे सुधारवादी आंदोलन में एक उत्प्रेरक का काम करने की दृष्टि से इन फिल्मों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक परंपरा का परिचय प्राप्त करने के लिए जिन साधनों का सहारा लिया जाता है, उनमें नाट्य कला एवं सिनेमा का विशिष्ट स्थान है । भारतवर्ष के स्वाधीनता संघर्ष में हिंदी सिनेमा का अतुल्य एवं अमूल्य योगदान रहा है। देश की जनता ने चाहे आजादी से पहले का समय हो या आजादी के बाद का समय, हमेशा हिंदी सिनेमा में अपनी रूचि दिखाई है क्योंकि हिंदी सिनेमा ने उनके अन्तः करण को जागृत करके उन्हें सामाजिक धार्मिक एवं राजनैतिक कुरीतियों से लड़ने एवं उन्हें दूर करने योग्य बनाया । सन् 1919 में जालियांवाला 59 बाग़ से सन् 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन तक की अवधि में देश का मध्यवर्ग राजनैतिक रूप से अधिक चेतन हो चुका था। यद्यपि उसकी इस चेतना में गुलामी की हीनभावना भी परिलक्षित होती थी। गुलामी के साथ देश में धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक गुलामी भी व्याप्त थी । इसी समय विश्व में आदर्शों को लेकर लड़ाई छिड़ी अनेक प्रचलित वादों में सत्य की शक्ति को जांचने के लिए बुद्धिवादी मनुष्य, विज्ञान विषय का सहारा लेकर संहार करने लगा।

भारत में 5 मार्च, 1918 को सिनेमा फोटोग्राफ एक्ट लागू किया गया। इस एक्ट का संबंध विशेष रूप से देश की राजनैतिक चेतना से था, न कि सांस्कृतिक चेतना से । जहां भी अंग्रेजों को यह लगता कि किसी फिल्म विशेष से स्वतंत्रता का संदेश फैलाने की कोशिश हो रही है, वहीं यह दृश्य सेंसर की कैंची का शिकार हो जाता। सन् 1921 में एक फिल्म बनी थी भक्त विदुर उसमें द्वारकादास संपत, विदुर बजे थे, जो दुबले-पतले और लंबे कद के थे भक्त विदुर के शरीर पर एक धोती थी और हाथ में एक छड़ी । ब्रिटिश सरकार ने इस भक्त विदुर को महात्मा गांधी का प्रतीक मान कर उस पर प्रतिबंध लगा दिया। कुछ इसी तरह की घटना 'वन्दे मातरम' फिल्म के साथ भी हुई। अंग्रेजों के लिए वंदे मातरम् शीर्षक राष्ट्रवादी चेतना को जगाने वाला था । इसलिए इस फिल्म के शीर्षक में आश्रम शब्द जोड़ कर

तसल्ली पा ली गई। वही शांताराम को अपनी फिल्म स्वराज तौरण के उस दृश्य को पूरी तरह हटाना पड़ा था, जिसमें शिवाजी महाराज के सैनिक, दुश्मनों से अपने किले को मुक्त कराकर स्वतंत्र ध्वज फहराते हैं।

इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि भारत में अंग्रेजी राज के विरूध्द राष्ट्रीय आंदोलन ने समाज में जो लहरें पैदा कीं, 1930 के आस-पास उनमें से एक लहर राष्ट्रीय सिनेमा की भी थी, जिसका संघर्ष भारतीय सिनेमा के औपनिवेशिक शोषण से था। पर इसमें कोई संदेह नहीं है कि राष्ट्रीय आंदोलन ने जिन सांस्कृतिक लहरों को जन्म दिया था उनमें से यह सबसे कमजोर लहर थी। एक तरफ जहां हमारा राष्ट्रीय नेतृत्व सिनेमा की शक्ति से प्रायः अनभिज्ञ था और उसे उपेक्षित दृष्टि से देख रहा था वहीं दूसरी तरफ प्रथम विश्व युद्ध के दौरान हुए अपने अनुभवों से अंग्रेज संप्रभुओं ने सिनेमा की ताकत को अच्छी तरह से पहचान लिया था। सिनेमा की ताकत के अहसास ने ही युद्ध के अंतिम चरण में यानी 1918 में अंग्रेजों को 'इंडियन सिनेमाटोग्राफ एक्ट' पारित करने के लिए बाध्य किया। इसके अंतग्रत सार्वजनिक प्रदर्शन पूर्व हर फिल्म को सेंसर बोर्ड से प्रमाण-पत्र लेना आवश्यक था। यह सेंसर परोक्ष रूप से पूरी तरह राजनीतिक था और इसके तहत् किसी भी राजनीतिक आंदोलन, व्यक्ति या घटना का चित्रण अथवा व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाने वाले कथानकों पर बने सिनेमा की नियति थी, उसका प्रतिबंधित होना । अर्थात् जब भारत में स्वतंत्रता की लड़ाई जन-आंदोलन की शक्ल अख्तियार कर रही थी, सिनेमा पर सेंसर की पाबंदियां लगा दी गईं। व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए सत्ता से बैर लेना काफी महंगा था। आश्चर्य नहीं कि ऐसे में राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ी फिल्में कम ही बनीं, इसके बावजूद ऐसी ढेरों फिल्में बनीं, जिन्होंने राष्ट्रीय जीवन-भावना एवं द्वंद्व को अभिव्यक्ति दी। मूक सिनेमा के दौर में ही भ्रष्ट औपनिवेशिक संस्कृति के प्रभावों के खिलाफ सामाजिक चेतना से लैस फिल्मों की परम्परा शुरू हो गई थी। पाटनकर बंधुओं द्वारा निर्मित 'शिक्षा एवं वासना' एवं 'कबीर कलाम' (1919) उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने सामाजिक चेतना की अलख जगाने के प्रयासों से सिनेमा को भी जोड़ा। भारत में अंग्रेजों ने जिस नए आर्थिक आचार-विचार को जन्म दिया था, जमींदार एवं साहूकार उसके अभिन्न अंग थे। इन जमींदारों एवं साहूकारों के शोषण को पहली बार 1925 में बाबूराव पेंटर ने 'सावकारी पाश' बनाकर अभिव्यक्ति दी। 1931 में 'आलमआरा' के प्रदर्शन के साथ ही भारत में सवाक् फिल्मों की शुरुआत हुई। यह वह समय था, जब राष्ट्रीय आंदोलन गोलमेज सम्मेलन के उबाऊ दौर से गुजर रहा था और जनता बेचैनी से राष्ट्रीय नेताओं को निहार रही थी। इस समय भारतीय सिनेमा ने जनता की भावनाओं को पर्याप्त अभिव्यक्ति दी। सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रभाव वहन करने के कारण बड़ी संख्या में 1931 से 1934 के बीच फिल्में प्रतिबंधित हुईं जिनमें से कुछ 1937 में कांग्रेस की सरकारों के अस्तित्व में आने के बाद प्रदर्शित हो सकीं।

बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक की अनेक फिल्मों में जमींदार और किसान, साहूकार और सर्वहारा वग्र तथा मिल मालिक और मजदूरों के संबंधों, उनके शोषण का चित्रण हुआ। किंतु पूरी ईमानदारी से विषय को चित्रित करने का साहस बहुत कम लोगों ने किया। बॉम्बे टाकीज की फिल्म 'जन्मभूमि' (1936) और प्रभात फिलम्स की 'वहां' (1937) या 'बियॉन्ड द होराइजन' में दासता के विरुद्ध क्रांतिकारी स्वरों को सजीवता के साथ चित्रित किया गया था, जिनमें देश के युवा वग्र के हृदय की कसमसाहट झलकती है। इसी दौर की एक फिल्म 'आजादी' थी जिसमें देश के अंदर व्याप्त गुलामी और दासता की मानसिकता को जड़ से उखाड़ फेंकने का अभिप्राय छिपा था।

वी. शांताराम का नाम राष्ट्रवादी फिल्मकारों में अग्रणी है। श्री शांताराम ने हमेशा ज्वलंत सामाजिक और राजनीतिक प्रश्नों को लेकर फिल्में बनाई और भरसक प्रयास किया कि सामाजिक और राजनीतिक चेतना के प्रसार में फिल्में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। 1937 में बनी उनकी फिल्म दुनियाँ न माने बेमेल विवाह की समस्या को बड़ी शिद्दत के साथ उठाती हैं। फिल्म को उन्होंने किसी भी रुमानी हल से दूर रखा । सन 1939 में उन्होंने आदमी बनाई, जिसमें पहली बार वेश्या को एक हाड़-मांस की भावना प्रवण महिला के रूप में चित्रित करते हुए वेश्या पुनर्वास की

PRINCIPAL

समस्या को गंभीरता से उठाया गया। सन 1941 में बनी पड़ोसी हिंदू-मुस्लिम एकता और सांप्रदायिक सौहार्द के सवाल की जांच-पड़ताल करती है और दिखाती है कि संकीर्ण सियासत ही भाई-भाई के बीच वैमनस्य पैदा करती हैं। उनकी सर्वाधिक उल्लेखनीय फिल्म डा. कोटनीस की अमर कहानी (1946) है। यह फिल्म एक प्रतिबद्ध कलाकार की कूटनीतिक समझदारी का बेहतरीन नमूना है । ब्रिटिश सरकार ने भारतीय फिल्मकारों से युद्धकाल में अपने पक्ष में प्रचार हेतु मदद चाही । शांताराम ने कांग्रेस द्वारा डाक्टरों का एक मिशन चीन भेजने की समकालीन घटना को पहली बार सिनेमा का विषय बनाया । फिल्म में फासिस्ट जापान के खिलाफ चीनी राष्ट्रवादियों को दिखाया था, इसलिए ब्रिट्रिश सरकार ने इसे सहर्ष पास कर दिया। पं. मोतीलाल नेहरू ने इस मिशन को प्रायोजित किया था, अतः कांग्रेस प्रसन्न हुई । फिल्म में माओ की लाल सेना को दिलेरी से लड़ते हुए दिखाया गया था । इसलिए भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने भी इसे सराहा। फिल्म के माध्यम से शांताराम ने यह स्पष्ट कर दिया कि जो राष्ट्र दूसरे देशों की राष्ट्रीयताओं का हर स्तर पर समर्थन कर रहा है, वह स्वयं कितना प्रतिबद्ध है अपनी आजादी की लड़ाई के प्रति। इससे पहले उन्होंने जब महात्मा शीर्षक से महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत एकनाथ के जीवन पर फिल्म बनाई तो ब्रिटिश सेंसर ने इसका नाम बदलने के लिये शांताराम को बाध्य किया क्योंकि फिल्म के केन्द्रीय पात्र की कार्यविधि और कार्यक्रम गांधी से मिलते-जुलते प्रतीत हुए थे । फिल्म अंततः धर्मात्मा नाम से (1930-31) में प्रदर्शित हुई ।

सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना के प्रसार में फिल्में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। 1937 में बनी उनकी फिल्म 'दुनिया न माने' बेमेल विवाह की समस्या को बड़ी शिद्दत के साथ उठाती है। 1939 में उन्होंने 'आदमी' बनाई, जिसमें पहली बार वेश्या को एक हाड़-मांस की भावना प्रवण महिला के रूप में चित्रित करते हुए, वेश्या पुनर्वास की समस्या को गंभीरता से उठाया गया।

चैरीचैरा काण्ड के फलस्वरूप असहयोग आंदोलन वापस लेने पर सारे देश में गांधी जी की तीव्र आलोचना हुई। उनकी नीतियों से देश के बुद्धिजीवियों का एक वग्र उनका तीव्र आलोचक बन गया। ऐसे बुद्धिजीवी सिनेमा में भी कार्यरत थे तथा पी.के. आत्रे एवं मास्टर विनयाक ऐसे ही लोगों में थे। इन दोनों ने अपनी फिल्मों 'ब्रह्मचारी' (1938)', ब्रांडी की बोतल ' (1939) और धर्मवीर (1937) के माध्यम से गांधी जी की कार्यविधि, वं कार्यक्रमों की आलोचना की। 40 के दशक में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी काफी प्रभावशाली हो चली थी। बुद्धिजीवियों को इसने बेहद प्रभावित किया। सर्वहारा की विजय और पूंजीवाद की अनिवार्य पराजय का सिद्धांत सिनेमा के पर्दे पर भी दिखाई देने लगा। 1942 में महबूब खान ने 'रोटी' बनाई, जिसमें श्रम पर केंद्रित समाज का एक चित्र प्रस्तुत किया गया था और पूंजी पर केंद्रित समाज की निस्सारता को भी केंद्रित किया गया था।। 1943 में ज्ञान मुखर्जी की 'किस्मत' प्रदर्शित हुई, जिसमें 'दूर हटो ए दुनिया वालो हिंदुस्तान हमारा है' गाना था। युद्धकाल में ब्रिटिश सरकार ने इसे अपने पक्ष में माना किंतु वास्तव में 'दूर हटो ए दनिया वालों' कहकर राष्ट्रवादियों ने ब्रिटेन को भी चेतावनी दी थी। विमल राय की 'हमराही' (1946) इस दौर की सर्वाधिक प्रगतिशील फिल्म थी। इसमें साधन सम्पन्न और सर्वहारा, पूंजीपति और मजदूर, समाजवाद और पूंजीवाद के बीच की समस्याओं का एक बौद्धिक हल देने का प्रयास किया गया था। रवीन्द्र नाथ टैगोर का गीत 'जन-गण-मन अधिनायक' इस फिल्म में पहली बार इस्तेमाल किया गया था जो 1947 में स्वतंत्रता पश्चात् भारत का राष्ट्रगान बना।

अंतत: कहा जा सकता है कि भारतीय सिनेमा में अक्सर ऐसी फिल्में बनती हैं जो लोगों के अंदर देश भक्ति की भावना पैदा करता है। आज से नहीं बल्कि इतिहास के समय से ही भारतीय सिनेमा लोगों के अंदर देशभक्ति की भावना भरने में सहायक रहा है। भारतीय सिनेमा ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान काफी अहम रोल अदा किया था। जितनी मेहनत उस दौरान स्वतंत्रता सैनानियों ने की थी उतनी ही मेहनत भारतीय सिनेमा ने भी की थी। भारतीय सिनेमा न केवल उस दौरान प्रचार प्रसार में भूमिका अदा करता था अपितु आज भी लोगों के अंदर देश प्रेम की

PRINCIPAL
HINGOLI

भावना को पैदा करता है। भारत की आजादी की लड़ाई में यूं तो लाखों-करोड़ों हिंदुस्तानियों ने भाग लिया लेकिन कुछ ऐसे सपूत भी थे जो इस आजादी की लड़ाई के प्रतीक बनकर उभरे। राष्ट्रधर्म की खातिर क्रांति की पहली गोली चलाने वाले को भले ही तोपों से उड़ा दिया गया लेकिन जो चिंगारी उन्होंने लगाई उस आग में तपकर निकले स्वाधीनता सेनानियों ने अपने अहिंसक आंदोलन से अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। आजादी की महागाथा में उन युवा महानायकों को भी याद रखा जाएगा और उन्हें याद रखने में भारतीय सिनेमा आज भी बढ़चढ़ कर अपनी भूमिका अदा कर रहा है।

संदर्भ-

1. सिंह पुष्पपाल, भूमंडिकरण और हिन्दी सिनेमा, राधाकृष्कण प्रकाशन, दिल्ली.
2. श्रीवास्तव संजीव, हिन्दी सिनेमा का इतिहास, प्रकाशन विभाग, दिल्ली.
3. पारख ज्वरीमल, लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ

PRINCIPAL